केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में ‘‘लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार एवं प्रबन्ध तथा खारे पानी के कृषि में उपयोग’’ विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का समापन।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में ‘‘लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार एवं प्रबन्ध तथा खारे पानी के कृषि में उपयोग’’ विषय पर दिनांक 2 से 8 फरवरी, 2009 तक आयोजित की गई सात दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का आज दिनांक 8 फरवरी, 2009 में समापन हुआ।

इस प्रशिक्षण कोर्स में तमिलनाडु प्रदेश के वन विभाग के प्रसार विंग के अन्तर्गत आने वाले 10 Forest Rangers ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रदेश की लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार एवं खारे पानी को वन लगाकर कैसे उपयोग किया जाये तथा इन मृदाओं के सुधार एवं प्रबन्धन तकनीक से प्रदेश की समस्याग्रस्त मृदाओं का आंकलन करके, समस्या के निदान की दिशा में कार्य किया जा सके।

प्रशिक्षण कोर्स के समन्वयक तथा तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार प्रभाग के अध्यक्ष डा. राम अजोर ने प्रशिक्षण कोर्स का उद्देश्य बताते हुये पिछले 7 दिनों का संक्षिप्त ब्यौरा दिया। डा. राम अजोर ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों को थ्योरी के साथ’–साथ प्रयोगशाला में प्रैक्टिकल भी कराये गये तथा संस्थान के प्रक्षेत्र पर चल रहे शोध प्रयोगों के अलावा, संस्थान के हिसार स्थित प्रायोगिक प्रक्षेत्र पर संस्थान द्वारा की जा रही सुगन्धित एवं औषधीय पौधों की खेती के साथ–साथ समस्याग्रस्त मृदाओं एवं पानी के क्षेत्रों का भ्रमण भी कराया गया। डा. अजोर ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों को इस दौरान अन्य जानकारी के साथ–साथ विशेषकर कृषि वानिकी से सम्बन्धित किये गये सभी आवश्यक शोधों की जानकारी विस्तृत रूप से संस्थान के निदेशक व अन्य विशेषज्ञों द्वारा दी गई।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुये लवणग्रस्त मृदा व खारे पानी को कृषि के लिये गम्भीर समस्या बताया। निदेशक ने संस्थान द्वारा लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार व खारे पानी के कृषि में उपयोग पर निकाली गई तकनीक अपनाकर इस समस्या से निजात पाने पर चर्चा करते हुए कहा कि कृषि योग्य जमीन में भी तत्वों की कमी होती जा रही है। किसानों को जागरूक करने के लिए हम सब को मिलकर संयुक्त प्रयास करने होंगे जिसमें सरकारी मशीनरी के साथ–साथ किसानों की भागीदारी आवश्यक है।

डा. गुरबचन सिंह ने उम्मीद जताई कि इस प्रशिक्षण के बाद सभी प्रशिक्षणार्थी अपने–अपने क्षेत्र में संस्थान द्वारा बताई गई तकनीकियों को किसानों के खेतों पर प्रदर्शन करके उन्हें तकनीकी जानकारी देने में कामयाब होंगे तथा किसानों द्वारा आने वाली समस्याओं को संस्थान को बतलायेंगे ताकि समस्या का समाधान तलाशा जा सके। किसानों के लिये यह संस्थान हर सम्भव सेवा के लिये तत्पर रहता है। निदेशक ने कहा कि पेड़ पौधे हमारे जीवन में बहुत ही काम करते हैं। पेड़ों को सुरक्षित रखने में वर्षा आदि ठीक होती रहती है तथा कृषि के लिये अनुकूल जलवायु बनी रहती है उन्होंने पेड़ों को काटने से रोकने एवं वनों की पूरी देखभाल करने की सलाह दी। निदेशक महोदय द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।